**International Journal of Advanced Educational Research**
**ISSN: 2455-6157**
**Impact Factor: RJIF 5.12**
**www.educationjournal.org**
**Volume 3; Issue 6; November 2018; Page No. 50-51**

# चित्रकूट धाम : सती अनुसुइया आश्रम की तीर्थ यात्रा एवं पर्यटन का भौगोलिक अध्ययन

**डॉ० जितेन्द्र सिंह**
सहायक प्राध्यापक भूगोल, विन्ध्यांचल महाविद्यालय, जिगना, जिला सतना, मध्य प्रदेश, भारत।

**सारांश**
सती अनुसुइया आश्रम चित्रकूट धाम का एक पवित्र एवं धार्मिक सिद्ध स्थल माना जाता है। इस आश्रम का सौन्दर्य एवं भव्यता दर्शनीय है। आश्रम के सामने कल–कल बहती हुई मंदाकिनी नदी की धारा नदी के दोनों तटों पर कतारबद्ध रूप से खड़े ऊँचे–ऊँचे वृक्ष यहाँ के सौन्दर्य को और अधिक बढ़ा देते है। आश्रम में प्रवेश करते ही बड़े बाबा का समाधि स्थल स्थित है। मुख्य मन्दिर का सौन्दर्य अद्वितीय है। सती अनुसुइया अपनी माँ देवहुती, पिता श्री करदम, ऋषि भाई कपिल और नौ बहनों के साथ दिखाई देती है। अगले चित्र में अत्रिमुनि के साथ माता अनुसुइया के विवाह का चित्रण किया गया है। तीसरी तस्वीर में माता अनुसुइया जी का पति की आज्ञा से पानी लेने जाने का दृश्य अंकित है। चौथे दृश्य में माता अनुसुइया की कृपा से मंदाकिनी गंगा के अवतरण को दिखाया गया है। पाँचवें चित्र में माता अनुसुइया द्वारा सती नर्मदा के उद्वार का चित्रण किया गया है। छठवे दृश्य में त्रिदेव ब्रम्हा, विष्णु, महेश भिक्षुवेश में माता से भोजन माँगने का दृश्य अंकित है। इसके साथ ही त्रिदेवों को बालक रूप में पालने पर झुलाते हुए का दृश्य अंकित है। इसके पश्चात् त्रिदेवियों द्वारा अपनी भूल से पति वियोग में परेशान एवं माँ से क्षमा माँगने का दृश्य प्रस्तुत है। माता अनुसुइया, उमा, रमा एवं शारदा को उनकी भूल पर क्षमा करती है एवं उन्हें सुहाग का दान देती है। इसके अतिरिक्त इसमें आश्रम अनुसुइया माता द्वारा सीता जी को पतिव्रत धर्म को बताने तथा दत्तात्रेय चन्द्रमा एवं दुर्वाशा ऋषि को तप में लीन दिखाया गया है। इस आश्रम से लगे हुये लम्बे हाल का दृश्य आलौकिक है। इस हाल का सौन्दर्य देखने पर राजा, महाराजाओं की कोठियो का सौन्दर्य फीका दिखाई देता है।

**मूल शब्द :** चित्रकूट धाम, सती अनुसुइया आश्रम, तीर्थ यात्रा, पर्यटन।

## प्रस्तावना
चित्रकूट धाम को एक पावन तीर्थ स्थल होने का गौरव प्राप्त है। इस क्षेत्र में स्थित अनुसुइया आश्रम अनेकों ऋषियों एवं मुनियों को अध्यात्मिक भक्ति भावना प्रदान कर उनका जीवन कृतार्थ किया है। महर्षि बाल्मीकि, तुलसीदासजी, रहीमदास जी, तानसेन इत्यादि अनेकों ईश्वर भक्त, भक्ति मार्गी महापुरुषों की इस पावन तपोवन ने असाधारण अध्यात्मिक ऊर्जा प्रदान की है। श्रद्धा, भक्ति, समर्पण और विश्वास तथा चमत्कारों से पूर्ण यह दिव्य आश्रम स्थल अपने अध्यात्मिक और धार्मिक वैभव से परिपूर्ण है। ज्ञान भक्ति अध्यात्म और सर्वप्रेम का प्रतीक यह आश्रम मानव कल्याण की मंदाकिनी है। अनेक प्राकृतिक वैभव, धार्मिक महत्व, महात्म एवं सुरम्य प्राकृतिक वातावरण से सम्पन्न चित्रकूट धाम का यह क्षेत्र असाधारण महत्व वाला है। यहाँ सभी धर्मों के अनुयायी, देशी, विदेशी आध्यात्मक प्रेमी, भक्ति भाव सेवी, श्रद्धालु पर्यटकों व जिज्ञासुओं का सदैव ही आवागमन बना रहता है।[1–4]

सती अनुसुइया आश्रम अत्यन्त पावन है। यहाँ तपश्रेष्ठ ऋषि अत्रि अपनी धर्म प्राण पत्नी महासती अनुसुइया के साथ निवास करते थे। वे निरंतर ईश्वर की आराधना में लीन रहते थे। महर्षि बाल्मीकि के विवरण के अनुसार एक बार यहाँ दस वर्षों तक वर्षा नही हुई। अनावृष्टि के कारण भयंकर आकाल पड़ा। अन्न, जल के भीषण अभाववश जीव–जन्तु, पशु–पक्षी त्राहि–त्राहि करने लगे, जंगल निरन्तर दग्ध होने लगे। यह देखकर माता अनुसुइया को अत्यधिक क्लेश हुआ और उन्होंने कठोर तपस्या आरम्भ कर दी तथा अपने तप बल के प्रभाव से यहाँ चारों तरफ फलफूल और हरियाली पैदा कर दी। साथ ही मंदाकिनी की धारा प्रवाहित कर वन स्थिति समस्त प्राणी, वनस्पतियों एवं ऋषिजनों के क्लेषों और कष्टों का निवारण किया। (अयोध्याकांड – सर्ग 117, श्लोक 9, 10) तबसे वर्तमान समय तक इस पर्वत श्रेणी के गर्भ से सहस्त्रों जल स्त्रोत निरन्तर निरक्षरित होते रहते है और यह समस्त जल स्त्रोत कुण्ड में विलीन होकर मंदाकिनी नदी का रूप धारण कर प्रवाहित होते है। चित्रकूट आगमन के पश्चात् भगवान राम एवं सीता – महर्षि अत्रि और माता अनुसुइया के दर्शनार्थ यहाँ पधारे थे, तब सती अनुसुइया जी ने सीता जी को पतिव्रता तथा सतीत्व की महिमा को बताया था। ऐसा प्रसंग गोस्वामीकृत रामचरित मानस में मिलता है। ऐसी मान्यता है कि इस स्थल से दण्डक वन आरम्भ हो जाता है और रावण के राज्य की सीमा भी यही से प्रारंभ होती थी। इसी दुर्गम स्थल पर रावण ने अपनी सीमा के रक्षार्थ खरदूषण और विराध जैसे राक्षस सेनापतियों को नियुक्त कर रखा था।[5–8]

## भौगोलिक परिचय
यह आश्रम सतना जिले के मझगवाँ तहसील में स्थित है। चित्रकूट से यह स्थल 12 कि.मी. दक्षिण पूर्व में स्थित है। यह पवित्र स्थल विन्ध्य श्रेणी के तलहटी में एवं मंदाकिनी के तट पर स्थित अत्यन्त रमणीक स्थल है। यह 25°.9′ उत्तरी अक्षांश एवं 80°.52′ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। पुण्य सलिला मंदाकिनी के तट पर स्थित अनुसुइया आश्रम मध्यप्रदेश एवं उत्तर प्रदेश राज्य के लोगों का आस्था का केन्द्र है। यह धार्मिक पर्यटन केन्द्र सतना चित्रकूट मुख्य मार्ग से पूर्व की ओर 5 कि.मी.की दूरी पर स्थित है। यहाँ पहुंचने के लिए पहले कच्चा मार्ग था किन्तु वर्तमान में चित्रकूट विकास प्राधिकरण द्वारा पक्की सड़क का निर्माण कराया गया है। यह स्थल सतना से 70 कि.मी., इलाहाबाद से 132 कि.मी. एवं लखनऊ से 295 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।[1–2]

यहाँ की जलवायु उष्ण कटिबन्धीय मानसूनी है। वर्ष में यहाँ तीन ऋतुयें होती है। वर्षा ऋतु जुलाई–सितम्बर तक होती है। वर्षा ऋतु में औसत 1250 मि.मी. वर्षा होती है। ग्रीष्म ऋतु मार्च–जून तक होती है। इस ऋतु में तापमान अत्यधिक ऊँचे हो जाते है फिर भी घनें वनों एवं पास में प्रवाहित मंदाकिनी नदी के कारण शीतलता बनी रहती है। शीत ऋतु में कड़ाके की ठण्ड पड़ती है। यह ऋतु नवम्बर–फरवरी तक होती है। इस समय औसत तापमान 12 से 15 डिग्री से.ग्रे. रहता है।[8]

सती अनुसुइया आश्रम के आस–पास का सम्पूर्ण क्षेत्र घने वनों से आच्छादित है। यहाँ के वनों में लगभग 150 प्रकार की प्रजातियों

के पेड़–पौधे एवं औषधीय वनस्पतियाँ पायी जाती है। यहाँ के घने वनों में विविध प्रकार के पशु–पक्षी विचरण करते है। बन्दरों का झुण्ड देखने को मिलता है। मंदाकिनी नदी में बड़ी संख्या में मछलियों का आनन्द लिया जा सकता है।

## विश्लेषण

सती अनुसुइया आश्रम का हमने व्यक्तिगत रूप से अध्ययन किया जिसका विश्लेषण निम्नानुसार है–

यहाँ आने वाले सर्वाधिक पर्यटक 15 जनवरी से 15 मार्च के बीच की अवधि में आते है, इसका कारण है कि इस समय यहाँ की जलवायु पर्यटकों के लिए अनुकूल होती है।

पर्यटकों की सामाजिक, आर्थिक संरचना उनके उपयोग, प्रतिरूप को प्रभावित करती है। इसके माध्यम से पर्यटकों की आयु, लिंग, शिक्षा, व्यवसाय एवं आर्थिक स्तर की जानकारी मिलती है। यहाँ आने वाले पर्यटकों की सामाजिक आर्थिक स्थिति का अध्ययन करने से ज्ञात हुआ कि यहाँ आने वाले पर्यटकों में 20 से 40 आयु वर्ग के पर्यटकों की संख्या 20 प्रतिशत थी। 40 से 60 आयु वर्ग के पर्यटकों की संख्या 55 प्रतिशत पायी गई जो सर्वाधिक थी। 60 वर्ष से ऊपर आयु वर्ग में पर्यटकों की संख्या 25 प्रतिशत पायी गई। 20 वर्ष से कम आयु वर्ग के अधिकांश पर्यटक अपने साथी या मित्रों के साथ यात्रा पर आये थे। 20 से 40 आयु वर्ग के पर्यटक अपने परिवार या मित्र के साथ पर्यटन पर तथा 60 वर्ष से अधिक के पर्यटक अकेले या परिवार के साथ यहाँ के दर्शन हेतु आये थे।

लिंग के आधार पर पर्यटकों का अध्ययन करने पर पाया गया कि आने वाले तीर्थ यात्री या पर्यटकों में 55 प्रतिशत पुरुष थे एवं 45 प्रतिशत महिलायें थी। महिला तीर्थ यात्री या पर्यटक इस स्थल की यात्रा के समय अधिक पवित्रता का ध्यान रख रही थी। आने वाली महिला तीर्थ यात्रियों में 15 प्रतिशत महिलायें इस स्थल पर स्नान करने के बाद आश्रम में प्रवेश की। वहीं पुरुष वर्ग के तीर्थ यात्री एवं पर्यटकों में धार्मिकता तथा शुद्धता का विचार कम देखने को मिला।

व्यवसाय के आधार पर विश्लेषण करने पर पाया गया कि यहाँ आने वाले सर्वाधिक पर्यटक कृषक या कृषि मजदूर वर्ग के थे। इनका प्रतिशत 45 पाया गया। दूसरे स्थान पर नौकरी पेशा वर्ग के लोगों का था इनका प्रतिशत 20 पाया गया शेष पर्यटक व्यापारी, व्यवसायी या अन्य वर्ग के थे।

आय के आधार पर पर्यटकों का विश्लेषण करने पर पाया गया कि माता अनुसुइया आश्रम की यात्रा करने वाले सर्वाधिक पर्यटक विकास निम्न आय वर्ग के थे। इनका प्रतिशत 50 पाया गया वहीं मध्यम आय वर्ग के पर्यटकों का प्रतिशत 25 एवं उच्च आय वर्ग के पर्यटकों का प्रतिशत मात्र 10 पाया गया। 15 प्रतिशत पर्यटक निर्भर पाये गये। निर्भर पर्यटकों में अध्ययनरत पर्यटक स्कूल एवं कालेज के छात्र थे।

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि इस पर्यटन केन्द्र में विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए अभी बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। वहीं घरेलू पयटकों की संख्या जिस समय अधिक होती है उस समय को ध्यान में रखते हुए और अधिक सुविधाओं के विस्तार की आवश्यकता है।

## निष्कर्ष

यहाँ की तीर्थ यात्राओं में भारी परिवर्तन हो रहा है। तीर्थ यात्राओं पर पर्यटन क्रमशः हावी होता जा रहा है। जहाँ पहले सती अनुसुइया आश्रम की यात्रा तीर्थ यात्रियों द्वारा की जाती थी वहीं इस स्थल की ओर मनोरंजन, अवकाश बिताने, शैक्षणिक, सैलानी, प्राकृतिक सुषमा का आनन्द लेने के उद्देश्य से पर्यटकों का आगमन बढ़ा है। जहाँ पहले प्रौढ़ एवं वृद्धजन इन स्थल की यात्रा पर अधिक आते थे वहीं अब उनके साथ–साथ युवा विदेशी, निवविवाहित जोड़ी भी इस स्थल पर दिखाई देने लगे है। यहाँ आने वाले पर्यटकों में खान–पान, पहनावा, धार्मिक नियमों को मानने की आदतें भी कम होती नजर आ रही है। यहाँ के पर्यटकों का खान–पान, रहन–सहन, पहनावा, पवित्रता, आचार–व्यवहार आदि में आया परिवर्तन निःसंदेह नये पर्यटन की देन है। क्रमशः पर्यटन की नूतन प्रवृत्तियों को यहाँ देखा जा सकता है। बढ़ते हुए पर्यटन में इस स्थल पर कई पर्यावरणीय समस्याओं को जन्म दिया है, जो नये पर्यटन की देन है।

शोध कार्य दौरान शोधार्थी ने यह पाया कि इस पवित्र आश्रम में क्रमशः व्यावसायिक गतिविधियों की वृद्धि के कारण लोगों ने यहाँ की शासकीय वन भूमि पर धीरे–धीरे अतिक्रमण आरम्भ किया है। अतिक्रमण का सबसे बुरा प्रभाव यहाँ की वनस्पतियों पर पड़ा है। आज से कई वर्ष पूर्व जब शोधार्थी ने इस क्षेत्र का भ्रमण किया था उस समय केवल 10–15 दुकाने थी और आस–पास का पूरा क्षेत्र घने वनों से आच्छादित, बड़ा सुहावना नजर आता था। व्यावसायिक प्रवृत्ति में वृद्धि के चलते मार्ग के दोनों किनारों के वृक्षों को काटकर दुकाने बनाई गई है। यहाँ रहने वाले लोग अपने उपयोग के लिए इन्हीं वनों से लकड़ी प्राप्त करते है जिसके चलते हरा–भरा जंगल क्रमशः वीरान होता जा रहा है। यहाँ गाँवों में रहने वाले गरीब मजदूरों का मुख्य धंधा लकड़ी काटना, जलाऊ लकड़ी आस–पास की नगरीय बस्तियों में बेचना प्रमुख धंधा है। निश्चय ही वनों का ह्रास नये पर्यटन की देन है। पर्यटकों द्वारा बड़ी मात्रा में पोलीथीन, पूजा सामग्री तथा अन्य सामग्री की पवित्र मंदाकिनी नदी में प्रवाहित कर देते है जिससे नदी का जल भी क्रमशः प्रदूषित होता नजर आ रहा है।

सती अनुसुइया की आश्रम की तीर्थ यात्रा पर नया पर्यटन क्रमशः भारी पड़ रहा है और नये पर्यटन ने यहाँ के पर्यावरण, समाज, संस्कृति, वेषभूषा, खानपान, रहन–सहन आदि पर व्यापक प्रभाव डाला है एवं डाल रहा है।

अतः आवश्यकता है कि पवित्र स्थल के लिए हम एक सुनियोजित योजना बनाये जिससे पर्यटन को बढ़ावा मिलने के साथ–साथ हम अपनी संस्कृतियों को अक्षुण्य बनाये रखते हुए पर्यावरणीय ह्रास को भी कम करें अन्यथा यह आकर्षक पवित्र स्थल एक उजाड़ स्थल में परिणित हो जायेगा।

## सन्दर्भ


1. सिंह, बी.पी. : मध्यप्रदेश में पर्यटन विकासः समस्यायें एवं संभावनायें, शोध परियोजना प्रतिवेदन 2004, यू.जी.सी. मध्य क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल।
2. सिंह, आशारानी : बघेलखण्ड में पर्यटन का परिवर्तित स्वरूप एक ऐतिहासिक अध्ययन, शोध प्रबन्ध, अवधेश प्रताप सिंह वि. वि., रीवा।
3. हरिमोहन : संस्कृति पर्यावरण एवं पर्यटन, शोध पत्र पर्यटन के विविध आयाम पुस्तक में प्रकाशित, पृ.29.
4. वर्मा, सजंय कुमार : पर्यटन एवं पर्यटन उत्पाद।
5. नेगी, जगमोहन : पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धांत, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 96.
6. शुक्ला, अनूप कुमार : प्रयाग और उसके परिप्रदेश में तीर्थ यात्रा एवं पर्यटन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि. रीवा।
7. सिंह, बी.पी. एवं सिंह, सुमन्त : मध्यप्रदेश में पर्यटन, आदित्य प्रकाशन, बीना।
8. पटेल, बी.पी. (1989) : सतना जिले के विकास केन्द्र, शोध प्रबन्ध, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा।